Inter 2nd year
Ch - 3

Philosophy
PAGE
DATE 21/4/20

# भागवद्गीता का दर्शन

## Questions and Answers

प्र-1 भागवद्गीता के दर्शन की संक्षेप में व्याख्या करें।

उत्तर→ भागवद्गीता हिन्दुओं की अत्यन्त ही पवित्र और लोकप्रिय रचना है। गीता में केवल धार्मिक विचार ही नहीं है बल्कि पूरे भारतीय दर्शन का निचोड़ निहित है। इसमें ईश्वर और आत्मा के सम्बन्ध में, जगत की सृष्टि के सबन्ध में सिद्धांत दिए गए हैं। वस्तुतः गीता में तत्वविचार, नैतिक विचार, ब्रह्म विद्या तथा योगशास्त्र भी निहित है। गीता को उपनिषदों का सार भी कहा गया है। गीता में उपनिषद के सत्यों को सरल एवं प्रभावशाली रीति से प्रस्तुत किया गया है। दार्शनिक श्री अरविन्द के अनुसार गीता भारतीय आध्यात्मिकता का परिपक्व सुमधुर फल है। भागवद्गीता की रचना प्रभावशाली छन्दों में हुई है, इसलिए इसे ईश्वर संगीत भी कहा गया है क्योंकि इसमें भगवान कृष्ण ने स्वयं उपदेश दिया है। गीता के वचनों में दार्शनिक सिद्धान्तों का उल्लेख है। गीता इतना विश्लेषणात्मक है कि इसे साधारण मनुष्य को समझने में कठिनाई होती है। गीता की मुख्य प्रवृत्ति समन्वयात्मक है।

प्रश्न-2 गीता में योग के अर्थ को स्पष्ट करें।

उत्तर→ योग शब्द का निर्माण 'युज' धातु माना जाता है जिसका अर्थ मिलना होता है। यहाँ योग शब्द का व्यवहार आत्मा का परमात्मा से मिलन के अर्थ में किया गया है। गीता का मुख्य उपदेश योग है। अतः

Scanned with CamScanner

PAGE

DATE

गीता को योग शास्त्र के नाम से भी जाना जाता है। जिस तरह मन के ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक अंग हैं इसी के अनुसार गीता में ज्ञानयोग, भक्ति योग तथा कर्म योग का समन्वय हुआ है। गीता के अनुसार आत्मा के बन्धन का नाश योग से ही संभव है। अतः मोक्ष की प्राप्ति ज्ञान योग, भक्ति योग, तथा कर्म योग से ही संभव है।

Q→3 भागवद् गीता में कर्मयोग के अर्थ को स्पष्ट करें-

Ans→ गीता का मुख्य विषय कर्म योग है। गीता में श्री कृष्ण ~~[illegible]~~ अर्जुन को निरन्तर कर्म करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। गीता में सत्य की प्राप्ति के निमित्त कर्म को करने का आदेश दिया गया है। वह कर्म जो असत्य तथा अधर्म की प्राप्ति के लिए किया जाता है, सफल कर्म की श्रेणी में नहीं आते हैं। गीता में कर्म से विमुख होने को नहीं कहा गया है। साथ ही कहा गया है कि बगैर फल की इच्छा किए अपना कर्म किये जा। गीता में कर्मयोग को निष्काम कर्म की संज्ञा दी गई है। जिसका अर्थ है कर्म को बिना किसी फल की अभिलाषा से करना।

प्रश्न-4 सकाम कर्म एवं निष्काम कर्म में अन्तर स्पष्ट

Ans→ जो कर्म स्वयं के कुछ सुख, लौकिक सुख की इच्छा से किए जाते हैं वे सकाम कर्म हैं। यह कर्म किसी संयोग अथवा किसी पदार्थ के संग्रह की भावना से किया जाता है। शरीर मुख्य सकाम कर्मों का केंद्र है और निष्काम कर्म के

वे कर्म है जिसे हम कामना की पूर्ती के लिए नहीं करते हैं। अपने सुख की अपेक्षा दूसरो के हितो व सुख के लिए करते है।

अतः स्पष्ट है कि कामनापूर्ण कर्म काम्य कर्म है और कामना रहित कर्म निष्काम कर्म है। निष्काम कर्म उद्देश्य प्राप्ति अथवा आवश्यकता से प्रेरित होता है और सकाम कर्म किसी कामना से प्रेरित होता है। कामना अनित्य तत्व ही होती है। उद्देश्य या आवश्यकता का संबंध नित्य और आध्यात्मिक तत्व से होता है।